पाश्चात्य नृत्य, आध्यात्म और पश्चिमी बैले नृत्य पर भारतीय नृत्यों की विषय वस्तु का प्रभाव

कु. माधुरी शर्मा
शोधार्थी, बनस्थली विद्यापीठ
बनस्थली विद्यापीठ, (राज.)

पाश्चात्य देशों की अपनी समृद्धनृत्य कला रही है। अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका के आदीवासी जनजाति के लोग प्राचीनकाल में मनोरंजन के लिए तथा धार्मिक कृत्यों के लिए नृत्य किया करते थे। वैसे तो पश्चिमी नृत्यों को आध्यात्म से नहीं जोडा गया है परन्तु प्राचीन काल से ही पश्चिमी संस्कृति में नृत्य को प्रभु की प्रशंसा का साधन माना है अतः प्राचीन काल में चर्च में नृत्य नाटिकाओं का आयोजन होता जिसमें नृत्य व संगीत के माध्यम से बाइबल के दोनो भाग (new and old testament) को दर्शाया जाता था। बाइबल के एक भाग वसक (Old testament) में दर्जनों स्थानों पर नृत्य (Dance) शब्द का प्रयोग भिन्न–भिन्न क्रियाओं के रूप में किया है। कुल 18 श्लोकों में Dance शब्द का प्रयोग हुआ है।

जैसे –

Psalm 150: 4
"Praise him with tambourine and dance; Praise him with strings and pipe!"
Psalm 149 : 3
"Let them praise his name with dancing, making melody to him with tambourine and lyre."

पूर्व की प्राचीन सभ्यताओं में नृत्य जिस प्रकार सुरक्षित रहा आज भी उसके प्रदर्शन का आधार वहीं है, पश्चिमी संस्कृति में नृत्य का इतिहास विभिन्नता और जल्दी–जल्दी परिवर्तन के चरित्र से युक्त है। पूर्व में नृत्य को आध्यात्म से जोडा है अतः भारत, सीरिया, मिश्र, थाइलैंड, जापान आदि देशों में नृत्य मंदिरों में प्रस्तुत किए जाते रहे हैं जिन्हे देवदासियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता परन्तु ये नृत्य शास्त्रीय थे, चर्च में नृत्यों का प्रस्तुतिकरण (choirboy) नृत्य मंडली द्वारा किया जाता था परन्तु इन नृत्यों के अंग भाव स्थानीय नृत्यों के अंग भावों से लिए गए थे प्रारम्भ में आधारभूत तत्व तथा सुन्दरता के साथ हलन चलन के गुण चर्च में ही उत्पन्न हुए परन्तु पश्चिमी शास्त्रीय नृत्य कला का विकास राजनैतिक और सामाजिक विचारों के प्रभाव से हुआ अतः नृत्य को आध्यात्म के स्थान पर राजा की प्रशंसा से जोडा गया और यह नृत्य बैले कहलाया। लगभग 700 वर्श पूर्व इटली में इस नृत्य की उत्पत्ति हुई, विकास फ्रांस में हुआ तथा रूस में आकर इस प्रकार प्रसिद्ध हो गया कि विश्वभर में इसकी प्रसिद्धी अविस्मरणीय बन गई। बाद में बैले नृत्य कन्टेम्पोरेरी नृत्य की संकल्पना के साथ विश्व भर की नृत्य शैलियों को प्रभावित करने में सफल रहा परन्तु बैले नृत्य शैली भारतीय प्रभाव से अछूति न रह सकी अतः 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ से बैले नृत्य शैली पर भारतीय प्रभाव दिखाई देते है। अब पश्चिमी नृतक भारतीय विषय वस्तु को आधार बनाते और उसे अपने अंदाज में अपनी नृत्य शैली की तकनीकों के माध्यम से प्रस्तुत करते।

जैसे – 1830 में फिलिप्पो, तेग्लियोनी ने पेरिस में "le dievet la bayadere" (देवता और नृतकी) जैसे विषय को लेकर एक बैले प्रस्तुत किया जिसमें नृतकी से तात्पर्य मंदिरों में नृत्य प्रस्तुत करने वाली नृतकी से था। बाद में इसी विषय पर मरियस पेतिया ने भी 1877 में "The bayadere" (नृतकी) नामक एक बैले की रचना की जिसे बाद में मारी तैग्लियोनी और अन्ना पावलोवा ने आगे बढ़ाया। 1858 में ल्यूसियन पेतिया (मरियस पेतिया के भाई) ने कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुन्ततलम् को बैले के रूप में प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने स्वयं दुष्यन्त की भूमिका निभाई। 1912 में वस्लव तिजिंस्की तथा तमारा कुर्सविन ने कृष्ण की लीलाओं पर आधारित बैले की रचना की जिसका नाम "le lieu bleu" (The blue god) था।

इन रचनाओं का उद्देश्य नृत्य को आध्यात्म से जोड़ना नहीं था वरन पश्चिमी दर्शकों को कुछ नया दिखना था क्योंकि 1810 के पश्चात पुरानी रचनाओं से लोग ऊब चुके थे। इसके अलावा 1846 में दूसरा बैले "Laila rookh" (लाहौर का गुलाब) लंदन में हुआ। 1899 में मरियस पेतिया ने अकबर के चरित्र पर एक बैले की रचना की जिसको उन्होंने "The Talisman" नाम दिया। अतः भारतीय विशय वस्तुओं से पश्चिमी नृतक प्रभावित हुए और उस समय जब बैले नृत्य अवनती की ओर जा रहा था उन्होने भारतीय विषय वस्तुओं को आधार बना कर बैले नृत्य को जीवंत बनाने का प्रयास किया।

References

1. Ballet in western culture A history of its origins and evolution, Lee, Carol, 2002, Routledge 29 west 35th street, newyork, NY10001

2. Ballet A complete guide to appreciation, Haskell, Arnold L., second edition 1945, Harmondsworth Middlesex England penguin books, 245 fifth avenues Newyork U.S.A.
3. The book of dance, Mille, Agnes de, 1963, golden press new York
4. The queer encyclopedia of music, dance and musical theater, Claude J. Summers ed. First edition, cleis press inc. P.O. box 14697, San Francisco, California 94114
5. Indian ballet dancing , Banerji, Projesh, 1983, Abhinav publications new delhi
6. Indian contemporary : dance extravaganza, Banerjee Utpal K., shubhi publications 2010
7. The art of the dancer, Austin Richard, first edition 1982, barrie and Jenkins ltd an imprint of the Hutchinson publishing group 17-21 conway street, London w1p5hl